Gainer Academy

CLASS - 11TH

Psychology (मनोविज्ञान)

Chapter - 4

Sensory, attentional and perceptual processes

संवेदी, ध्यानात्मक और अवधारणात्मक प्रक्रियाएं

www.gaineracademy.in

Gainer Academy

Lesson 5 :- संवेदी अवधानिक एवं प्रात्यक्षिक प्रक्रियाएँ :-

- संवेदन ग्राही तंत्र : मानव के रूप में हमारी सात ज्ञानेंद्रियाँ है। इन ज्ञानेंद्रियों को संवेदन ग्राही अथवा सूचना संग्राही तंत्र भी कहते है क्योंकि ये विविध स्त्रोतों से सूचनाएँ प्राप्त अथवा संगृहित करते हैं।

पाँच ज्ञानेंद्रियाँ : जो बाह्य जगत से सूचनाएँ एकत्रित कराती हैं।

1) आँख 2) कान 3) नाक
4) जिह्वा 5) त्वचा।

दो गहन इंद्रियाँ : 1) गतिसंवेदी
2) प्रघाण तंत्र।

- संवेदना : जब हमारी ज्ञानेन्द्रियाँ किसी वस्तु को पहली बार अनुभव करती है तो वह पहला अनुभव संवेदना कहलाता है।

- मनोभौतिकी : उद्दीपक एवं उनकी संवेदनाओं के बीच के संबंधों का अध्ययन मनोभौतिकी में किया जाता है।

* ज्ञानेंद्रियों की प्रकार्यात्मक सीमाएँ :

1) निरपेक्ष सीमा : किसी विशेष संवेदी तंत्र को क्रियाशील करने के लिए जो न्यूनतम मूल्य अपेक्षित होता है।

2) भेद सीमा: दो उद्दीपकों के मान में न्यूनतम अंतर, जो उनकी अलग पहचान के लिए आवश्यक होता है।

: चाक्षुष संवेदना :

जब प्रकाश हमारी आँखो में प्रवेश करता है तथा हमारे चाक्षुष ग्राहियों को उद्दीप्त करता है तो चाक्षुष संवेदना प्रारंभ होती है।

हमारी आँखे प्रकाश के उस वर्णक्रम के प्रति संवेदनशील होती है जिसके तरंगदैर्ध्य का परास 380 nm से 780 nm तक होता है।

* मानव आँख *

- हमारी आँख तीन परतों से बनी होती है। बाह्य परत एक पारदर्शी श्वेतपटल या कॉर्निया तथा एक कठोर स्क्लीरा होता है जो शेष आँख को घेरे रहता है।
- यह आँख की रक्षा करता है तथा उसका आकार यथावत् बनाए रखता है।

⇒ मध्य परत को रंजित पटल कहते है जिसमें बहुत सी रक्त नलिकाएं पाई जाती है।

⇒ आंतरिक परत को दृष्टिपटल या रेटिना कहते है। इसमें प्रकाशग्राही और अतः संबंधित तंत्रिका

Date.....3.....

कोशिकाओं का एक विस्तृत जाल पाया जाता है।

- जलीय कोष्ठ : जलीय कोष्ठ कॉर्निया एवं लेन्स के मध्य में स्थित होता है। यह आकार में छोटा होता है तथा इसमें पानी जैसा द्रव्य भरा रहता है जिसे नेत्रोद कहते हैं।

- काचाभ कोष्ठ : काचाभ कोष्ठ लेन्स एवं रेटिना के बीच में स्थित होता है। इसमें जैली जैसा प्रोटीन भरा रहता है जिसे काचाभ द्रव कहते हैं।

- पक्ष्माभिकी पेशियाँ : समंजन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से भिन्न-2 दूरियों की वस्तुओं को फोकस करने के लिए लेन्स अपने आकार में परिवर्तन करता है। यह प्रक्रिया पक्ष्माभिकी पेशियाँ जो लेन्स से जुड़ी होती है द्वारा संचालित होती है।

* अन्य मानवीय संवेदनाएँ :

1) घ्राण
2) स्वाद
3) घ्राण तंत्र
4) स्पर्श एवं अन्य त्वचा संवेदनाएँ :
5) गति संवेदना।

- पारितारिका : आंख में आने वाले प्रकाश की मात्रा को नियंत्रित करना।

- दृष्टिपटल : आंख की सबसे अंदर की परत को दृष्टिपटल कहते है।

* आंख की क्रियाविधि : नेत्रश्लेष्मा कार्निया तथा पुतली से होकर प्रकाश लेन्स में प्रवेश करता है जो इसे रेटिना पर फोकस करता है।

* रेटिना का विभाजन : 1) नासिकार्ध
2) शंखार्ध।

- नासिकार्ध : गर्तिका के केन्द्र को मध्य बिन्दु मान कर आंख के आंतरिक अर्ध भाग को नासिकार्ध कहा जाता है।

- शंखार्ध : गर्तिका के केंद्र से आंख के बाहरी अर्ध भाग को शंखार्ध कहते है।

- अंधस्थल : दृष्टि तंत्रिका दृष्टिपटल को उस क्षेत्र से छोड़ती है जहां प्रकाश ग्राही नही होते है। इस क्षेत्र में चाक्षुष संवेदनशीलता पूर्णतः अनुपस्थित रहती है। इसलिए इसे अंधस्थल कहते है।

* अनुकूलन *

- चाक्षुष अनुकूलन : प्रकाश की विभिन्न तीव्रताओं के साथ समंजन करने की प्रक्रिया को 'चाक्षुष अनुकूलन' कहते है।

- प्रकाश अनुकूलन : इसका संबंध मंद प्रकाश के प्रभावन के बाद तीव्र प्रकाश से समायोजन की प्रक्रिया से है। इस प्रक्रिया में एक से दो मिनट का समय लगता है।

- तम अनुकूलन : तीव्र प्रकाश के प्रभावन के बाद मंद प्रकाश वाले वातावरण से समायोजन की प्रक्रिया से संबंधित है।

* रंग दृष्टि *

पर्यावरण के साथ अंतःक्रिया करते समय हम विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का ही नहीं, बल्कि उनके वर्णों (रंगों) का भी अनुभव करते हैं। रंग हमारे संवेदी अनुभवों का एक मनोवैज्ञानिक विशेषता होते हैं।

* रंगों की विमाएँ : सामान्य वर्ण दृष्टि का एक व्यक्ति 70 लाख से अधिक विभिन्न रंगों की छटाओं में अंतर कर सकता है। हमारे रंगों के अनुभव का वर्णन तीन मूल विमाओं के रूप में किया जा सकता है।

1) वर्ण 2) संतृप्ति 3) द्युति।

रंग मिश्रण : रंगों में एक रोचक संबंध होता है वे पूरक युग्मों का निर्माण करते हैं।

सही अनुपात में मिश्रित करने के बाद पूरक रंग अवर्णक भूरा या सफेद रंग उत्पन्न करते हैं।

मूल रंग : लाल, हरा, नीला।

- उत्तर प्रतिमाएँ : दृष्टि क्षेत्र से चाक्षुष उद्दीपक के हट जाने के बाद भी उस उद्दीपक का प्रभाव कुछ समय तक बना रहता है।

- उत्तर प्रतिमा के प्रकार : 1) सम उत्तर प्रतिमाएँ
2) विसम उत्तर प्रतिमाएँ।

- सम उत्तर प्रतिमाएँ : वर्ण, संतृप्ति एवं द्युति के रूप में मूल उद्दीपक के सदृश होती है तम: व्यनुकूलित आँखों के संक्षिप्त तीव्र उद्दीपन के बाद सामान्यता से घटित होती है।

- विषम उत्तर प्रतिमाएँ : पूरक रंगों में दिखाई देती है।

: श्रवण संवेदना :-

- श्रवण भी एक महत्वपूर्ण संवेदना प्रकारता है। यह हमें विश्वसनीय स्थानिक सूचना देती है।

- श्रवण संवेदना तब प्रारंभ होती है जब ध्वनि हमारे कान में प्रवेश करती है तथा सुनने के प्रमुख अंगों को उद्दीप्त करती है।

मानव कान : कान श्रवण उद्दीपकों का प्राथमिक ग्राही है। इसका सर्वज्ञात प्रकार्य सुनना है, किंतु यह शरीर संतुलन को बनाए रखने में भी हमारी सहायता करता है।

- कान की संरचना के तीन खंड : 1) बाह्य, मध्य, आंतरिक कान।
- कान की क्रियाविधि : भिन्न ध्वनि कंपन को एकत्रित करती है तथा उसे श्रवण द्वारा कर्ण पटह तक पहुंचाती है।

: अवधानिक प्रक्रियाएँ :

- अवधान : वह प्रक्रिया जिसके आधार पर उद्दीपक समूह से कुछ उद्दीपकों का चयन किया जाता है उसी को सामान्यतया अवधान कहा जाता है।
- सतर्कता : व्यक्ति की तत्परता से होता है जिससे वह अपने समक्ष आए उद्दीपक का सामना करता है।
- एकाग्रता : एक समय में कुछ विशेष वस्तुओं के बोध के लिए अन्य वस्तुओं को दृष्टि से बाहर रखते हुए उस पर ध्यान केंद्रित करने की प्रक्रिया को एकाग्रता कहते हैं।
- अवधान का एक केंद्र और एक किनारा होता है।
- अवधान वर्गीकरण : एक प्रक्रिया - उन्मुख विचार इसे दो प्रकारों में विभाजित करता है -

1) चयनात्मक और संधृत ।

• विभक्त अवधान : कभी-2 हम एक ही समय में दो भिन्न क्रियाकलापों पर ध्यान दे सकते हैं । जब ऐसा होता है तब हम उसे विभक्त अवधान कहते हैं ।

• चयनात्मक अवधान : चयनात्मक अवधान का संबंध मुख्यतः अनेक उद्दीपकों में से कुछ सीमित उद्दीपकों अथवा वस्तुओं के चयन से होता है ।

• चयनात्मक अवधान को प्रभावित करने वाले कारक :

1) बाह्य कारक : उद्दीपकों के लक्षणों से संबंधित होते हैं । अन्य चीजों के स्थिर होने पर उद्दीपकों के आकार, तीव्रता तथा गति अवधान के प्रमुख निर्धारक होते हैं ।

2) आंतरिक कारक : व्यक्ति के अंदर पाए जाते हैं । इन्हें दो मुख्य श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है ।

1) अभिप्रेरणात्मक कारक
2) संज्ञानात्मक कारक ।

चयनात्मक अवधान के सिद्धांत :

1) निस्यंदक सिद्धांत : ब्राडबेन्ट (1958)
इस सिद्धांत के अनुसार, अनेक उद्दीपक एक ही साथ हमारे ज्ञानेन्द्रियों के पास पहुँचते हैं और गत्यवरोध की स्थिति उत्पन्न करते हैं ।

2) निस्यंदक क्षीण सिद्धांत : ट्रायसमैन (1962)
इस सिद्धांत के अनुसार, जो उद्दीपक एक विशेष समय में चयनात्मक निस्यंदक से नही जा पाते हैं वे पूर्णतः अवरुद्ध नहीं होते हैं।

3) बहुविधिक सिद्धांत : जॉन्सटन एवं हिन्ज (1978)
यह सिद्धांत मानता है कि अवधान एक लचीला तंत्र है जो अन्य उद्दीपकों की तुलना में किसी एक उद्दीपक का चयन तीन अवस्थाओं पर करता है।

- बहुविधिक सिद्धांत : उद्दीपक का संवेदी प्रतिरूपण निर्मित होता है;
- दूसरी अवस्था : आधी प्रतिरूपण (वस्तुओं) के नाम निर्मित होते हैं।
- तीसरी अवस्था : संवेदी एवं आधी प्रतिरूपण हमारी चेतना में प्रवेश करता है।

संघृत अवधान : संघृत अवधान का संबंध एकाग्रता से होता है। यह हमारी उस योग्यता से संबंधित होता है जिससे हम अपना ध्यान किसी वस्तु अथवा घटना पर देर तक बनाए रखते हैं। इसे 'सतर्कता' भी कहते हैं।

- संघृत अवधान को प्रभावित करने वाले कारक :

1) संवेदन प्रकारता
2) उद्दीपकों की स्पष्टता
3) कालिक अनिश्चितता
4) स्थानिक अनिश्चितता।

* प्रात्यक्षिक प्रक्रियाएं *

प्रत्यक्षण : जिस प्रक्रिया से हम ज्ञानेंद्रियों द्वारा प्रदान की गई सूचनाओं की पहचान करते हैं, व्याख्या अथवा उनको अर्थवान बनाते हैं उसे प्रत्यक्षण कहा जाता है।

- अभिप्रेरणा : प्रत्यक्षकर्ता की आवश्यकताएँ एवं इच्छाएँ उसके प्रत्यक्षण को अत्यधिक प्रभावित करती है। लोग विभिन्न साधनों या उपायों से अपनी आवश्यकताओं एवं इच्छाओं की पूर्ति करना चाहते हैं।

- प्रत्याशाएँ अथवा प्रत्यक्षिक विन्यास : किसी दी गई स्थिति में हम जिसका प्रत्यक्षण कर सकते हैं उसकी प्रत्याशाएँ भी हमारे प्रत्यक्षण को प्रभावित करती हैं।

- संज्ञानात्मक शैली : संज्ञानात्मक शैली का संबंध अपने पर्यावरण के साथ संगत तरीके से व्यवहार करने से है।

* प्रात्यक्षिक संगठन के सिद्धांत *

- आकृति प्रत्यक्षण : चाक्षुष क्षेत्र को अर्थयुक्त समग्र के रूप में सुगठित करने को आकृति प्रत्यक्षण कहते हैं।

गेस्टाल्ट एक नियमित आकृति अथवा रूप को कहते हैं।

गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों ने यह भी बताया है कि हमारी प्रमस्तिष्कीय प्रक्रियाएँ हमेशा अच्छी आकृति अथवा सौष्ठव का प्रत्यक्षण करने के लिए उन्मुख होती है। इसलिए प्रत्येक चीज को हम एक संगठित रूप में देखते हैं।

- आदिम संगठन आकृति-भूमि पृथक्करण के रूप में देखते हैं।

- गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों के प्रमुख नियम व सिद्धांत :

1) निकटता का सिद्धांत: जो वस्तुएँ किसी स्थान अथवा समय में एक दूसरे के निकट होती हैं वे एक दूसरे से संबंधित अथवा एक समूह के रूप में दिखती हैं।

2) समानता का सिद्धांत: जिन वस्तुओं में समानता होती है तथा विशेषताओं में वे एक दूसरे के समान होती हैं वे एक समूह के रूप में प्रत्यक्षित होती हैं।

3) निरंतरता का सिद्धांत: यह सिद्धांत बताता है कि जब वस्तुएँ एक सतत प्रतिरूप प्रस्तुत करती हैं तो हम उनका प्रत्यक्षण एक दूसरे से संबंधित के रूप में करते हैं।

4) लघुता का सिद्धांत: इस नियम के अनुसार लघुक्षेत्र बृहद् पृष्ठभूमि की तुलना में आकृति के रूप में दिखाई देते हैं।

5) सममिति का सिद्धांत: इस सिद्धांत के अनुसार असममित पृष्ठभूमि की तुलना में सममित क्षेत्र आकृति के रूप में दिखाई देते हैं।

6) अविच्छिनता का सिद्धांत: इस सिद्धांत के अनुसार जब एक क्षेत्र अन्य क्षेत्रों से घिरा होता है तो उसे हम आकृति के रूप में देखते हैं।

7) पूर्ति का सिद्धांत: उद्दीपन में जो लुप्त अंश होता है उसे हम भर लेते हैं तथा वस्तुओं का प्रत्यक्षण उनके अलग-2 भागों के

रूप में नहीं बल्कि समग्र आकृति के रूप में करते हैं।

* स्थान, गहनता तथा दूरी प्रत्यक्षण *

स्थान : जिस चाक्षुष क्षेत्र या सतह पर वस्तुएँ रहती हैं, गतिशील होती हैं अथवा रखी जा सकती हैं उसे स्थान कहते हैं।

गहनता प्रत्यक्षण : जगत को तीन विमाओं से देखने की प्रक्रिया को दूरी अथवा गहनता प्रत्यक्षण कहते हैं।

- एकनेत्री संकेत (मनोवैज्ञानिक संकेत)
  गहनता प्रत्यक्षण के एकनेत्री संकेत तब प्रभावी होते हैं जब वस्तुओं को केवल एक आंख से देखा जाता है।

- सापेक्ष आकार
- रेखीय परिप्रेक्ष्य
- प्रकाश एवं छाया
- रचनागुण प्रवणता
- आच्छादन अथवा अतिव्याप्ति
- आकाशी परिप्रेक्ष्य
- सापेक्ष ऊँचाई
- गतिदिगंतराभास

- द्विनेत्री संकेत (शारीरिक संकेत)
  त्रिविम स्थान में गहनता प्रत्यक्षण के कुछ महत्वपूर्ण संकेत दोनों आंखों से प्राप्त होते हैं। इनमें से तीन विशेष रूप से रोचक हैं।

- दृष्टिपटलीय अथवा द्विनेत्री असमता
- अभिसरण
- संमजन।

प्रात्यक्षिक स्थैर्य

संवेदी ग्राहियो के उद्दीपन में परिवर्तन के बाद भी वस्तुओं का सापेक्षिक स्थिर प्रत्यक्षण ही प्रात्यक्षिक स्थैर्य कहलाता है।

- आकार स्थैर्य
- आकृति स्थैर्य
- द्युति स्थैर्य ।

भ्रम

हमारी ज्ञानेंद्रियो से प्राप्त सूचनाओं की गलत व्याख्या से उत्पन्न गलत प्रत्यक्षण को सामान्यता भ्रम कहते हैं।

- ये बाह्य उद्दीपन की स्थिति में उत्पन्न होते हैं और समान रूप से प्रत्येक व्यक्ति इसका अनुभव करता है। इसलिए भ्रम को 'आदिम संगठन' भी कहा जाता है।

- ज्यामितीय भ्रम
- आभासी गतिभ्रम ।

प्रत्यक्षण पर सामाजिक- सांस्कृतिक प्रभाव :

हडसन : ने अफ्रीका में एक प्रारंभिक अध्ययन किया तथा पाया कि जिन लोगों ने चित्र कभी नहीं देखा था, उन्हें उनमें प्रदर्शित की गई वस्तुओं की पहचान एवं उनकी गहराई के संकेतों की व्याख्या करने में बड़ी कठिनाई हुई।

About

WELCOME TO GAINER ACADEMY

I am Pankaj Verma Welcome to Our Study Verse Learn Anything, Anywhere, Anytime. Improve your skills with our Tutorials. Unlock your potential and achieve success with us and Unleash your inner genius with our expert guidance.

We are offering a wide range of educational programs for all age groups and all standerd. We have dedicated teachers for helping students to reach their full potential and also guide students of their journey to success.

we are also available on

www.gaineracademy.in

GAINER ACADEMY

gaineracademy@gmail.com

gainer_academy

© All Right Reserved. Designed By Gainer Academy